Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

B. A. Part – II (Hons)
Paper – IV
पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
(Western Philosophy)

Notes

## 1. Hume: "Scepticism"
## ( ह्यूम: संशयवाद )

GRB BOOKS

ह्यूम भी लॉक और बर्कले की तरह अनुभववादी दार्शनिक थे। उन्होंने लॉक और बर्कले के अधूरे काम को पूरा किया। जिस अनुभववाद को मानकर वे चले उसपर अन्त तक निर्भय होकर, पूर्ण निष्पक्ष रीति से विचार करते हुए पहुँचे हैं। उनकी पद्धति मनोवैज्ञानिक और आलोचनात्मक रही है। उनको 'अज्ञेयवादी', सन्देहवादी, व्यवहारवादी, प्रत्यक्षवादी, इन्द्रियानुभववादी तथा संवेदनवादी भी कहा जाता है।

लॉक के अनुभववाद का अन्त ह्यूम के सन्देहवाद में हुआ है। लॉक ने प्रत्ययों के अतिरिक्त जड़-द्रव्य, आत्मा और ईश्वर तीन प्रकार के द्रव्यों को सत्य माना है। बर्कले ने इनमें से जड़ द्रव्य का बहिष्कार किया, किन्तु आत्मा और ईश्वर को इन्होंने स्वीकार लिया। ह्यूम का कहना है कि जिस युक्ति से जड़ द्रव्य का बहिष्कार किया गया है, उसी से आत्मा और ईश्वर का भी हो जाता है, क्योंकि वे भी अनुभवजन्य नहीं हैं। इसलिए द्रव्य के बहिष्कार का काम जिसे बर्कले ने आरम्भ किया था ह्यूम पूरा करते हैं और कहते हैं कि किसी भी तरह प्रकार का द्रव्य यथार्थ नहीं है। इस तरह उनके लिए भौतिक द्रव्य, आत्मा और ईश्वर कोई भी यथार्थ नहीं है।

द्रव्य उसे कहते हैं जो प्रत्यय नहीं बल्कि प्रत्ययों का आश्रय या अधिष्ठान होता है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

ह्यूम कहते हैं कि ऐसा कोई अधिष्ठान अनुभूत नहीं होता, इसलिए प्रत्यय को सत्य नहीं माना जा सकता है।

ह्यूम ने आत्मा के अस्तित्व का खण्डन करते हुए कहा है कि हम यदि आत्म-निरीक्षण के आधार पर अपनी आत्मा को जानने की कोशिश करें तो स्थायी स्वात्मा की सत्ता न पाकर सुख-दुःख संवेग भाव इत्यादि ही को अनुभूत कर पाते हैं। पर ये तो क्षणिक परिवर्तनशील ही आत्म प्रत्यक्ष है और स्थायी आत्मा कहीं देखने को मिलती है। अतः जिसे हम अपनी आत्मा कहते हैं, वह आत्म चिन्हित प्रत्यक्षों की राशि ही है और स्थायी आत्मा प्रत्य अनुभूत नहीं।

ह्यूम कार्य-कारण सिद्धान्त को सम्भाव्य मानते हैं। अनिवार्य नहीं। इनका कहना है कि यह कोई जरूरी नहीं कि जहाँ भी कार्य या घटना हो उसका कोई अमुक कारण भी अवश्य हो, कारण-कार्य दो भिन्न वस्तुएँ हैं और इसलिए पृथक भी है हमारे लिए यह सोचना जरूरी नहीं कि आग से ताप हो, क्योंकि हम कल्पना कर सकते हैं कि आग से ताप न मिलकर हमें ठंडक मिले। फिर कार्य-कारण सिद्धान्त अनुभव से सिद्ध भी नहीं है। यदि यह मान लिया जाय कि कारण होने पर कार्य का होना जरूरी है किन्तु इस तरह की अनिवार्यता कभी

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes

GRB BOOKS

अनुभूति नहीं होती इसलिए कार्य-कारण सिद्धान्त पर निष्कर्ष निकालना प्रमाण संगत नहीं है।

ह्यूम का कहना है कि वस्तु जगत के विषय में सार्वभौम और अनिवार्य ज्ञान संभव नहीं है। इसका कारण है कि ज्ञान का एकमात्र साधन अनुभव है और किसी भी वर्ग के भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालकी वस्तुओं का अनुभव असंभव है। इसलिए वस्तु जगत के विषय में केवल संभाव्य ज्ञान संभव है। बिल्कुल निश्चित, अनिवार्य और सार्वभौम नहीं। यही ह्यूम का सन्देहवाद है।

ह्यूम अपने को संदेहवादी स्वयं कहा करते थे तथा किसी अर्थ में सन्देहवादी थे भी। इनके अनुसार सार्वभौम और अनिवार्य ज्ञान असम्भव है यदि इन्द्रियानुभव ही हमारे ज्ञान का मापदण्ड है तो अनिवार्य ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसलिए इन्होंने कार्य-कारण जैसे सार्वभौम सिद्धान्त को भी सम्भाव्य बतलाया है अनिवार्य नहीं। अतः कार्य-कारण, द्रव्य, परमात्मा आदि सभी पर संदेह करने के कारण हम निश्चित रूप से ह्यूम को सन्देहवादी कह सकते है।

ह्यूम अपने संदेहवाद को स्पष्ट करते है, कहते है कि संदेहवाद यथार्थ में सदा के लिए किसी को सन्तुष्ट नहीं कर सकता। प्रकृति ही इन सन्देहवाद के बादलों को हटाने में

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS
Notes

सर्वथा असंगत है। प्रकृति स्वयं उस कार्य को नहीं करती है और मेरे इस मानसिक तनाव को ढीला करके या किसी अन्य सजीव आकर्षक अनुभव के द्वारा जो तत्क्षण उन कल्पनाओं को भुला देता है, मुझे दार्शनिक विषाद या भ्रान्ति से मुक्त कर देती है। फिर कुछ घण्टों के बाद जब मैं उन विचारों को पुनः देखता हूँ तो इतने निस्सार, अचेतन और हास्यास्पद दीख पड़ते हैं कि इनमें फिर उलझने की इच्छा ही नहीं होती।

ज्यामिति ज्ञान को ह्यूम ने असंदिग्ध नहीं माना है क्योंकि वे समझते हैं कि यह वास्तविक या काल्पनिक आकारों के प्रत्यक्षों पर आधारित रहता है। किन्तु बीजगणित, अंकगणित के निष्कर्ष को अनिवार्य और असंदिग्ध मानते हैं। परन्तु यहाँ भी ह्यूम ने कहा है कि हमारी शक्ति इतनी क्षीण है कि यहाँ भी गलती हो जाने की पूरी गुंजाइश है।

ह्यूम अपने संदेहवाद के सहारे अनुभवेत्तर विषयों में मानव बुद्धि की अक्षमता बतलाते हैं। अनुभव से परे विषयों को हम तर्क या प्रमाण से नहीं जान सकते। इस प्रकार मानव ज्ञान की सीमा निश्चित है। हम जानते हैं कि काण्टवाद ने मानव-ज्ञान को दृश्य - अदृश्य ज्ञात व अज्ञात सभी लोकों में पहुँचा दिया

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

था। ह्यूम ने बुद्धिवाद के दावों को निःसार बतलाते हुए यह सिद्ध कर दिया है कि मानव ज्ञान केवल इन्द्रियानुभव तक ही सीमित है। अतः ह्यूम के सन्देहवाद का तात्पर्य केवल मानव बुद्धि की अनुभवेतर विषयों में अक्षमता का प्रदर्शन है। ह्यूम आस्था और विश्वास का प्रदर्शन है। ह्यूम आस्था और विश्वास का निषेध नहीं करते हमारा दैनिक जीवन तो विश्वास पर ही चलता है। हम विश्वास पर आधारित मान्यताओं को पूर्णतः ध्वस्त नहीं करते। परन्तु साथ ही साथ उनका बौद्धिक समर्थन भी नहीं किया जा सकता। ह्यूम अपने सन्देहवाद के द्वारा केवल परम्परागत अन्धविश्वास से समाज को मुक्त करना चाहते हैं। अतः ह्यूम के सन्देहवाद का अर्थ है कि अनुभवेतर विषय मानव बुद्धि के परे हैं। इनकी प्रामाणिकता संदिग्ध है। अतः धर्म और तत्व-मीमांसा के विषय में वे कुछ दूर तक अवश्य संदेहवादी हैं परन्तु गणित, प्रकृति विज्ञान तथा समाजवादी विज्ञान की यथार्थता वे स्वीकार करते हैं। अतः इन विज्ञानों में वे सन्देहवादी नहीं हैं।

अतः यह सत्य है कि कोई भी व्यक्ति पूर्ण सन्देहवादी का का कोई दर्शन कोई विचार, कोई मान्यता। कोई निश्चय नहीं हो सकता। सन्देहवाद

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS
Notes

की प्रकृति आत्मघाती है क्योंकि सन्देहवाद के अनुसार स्वयं सन्देहवाद ही सन्देहवाद का विपक्ष बन जाता है। सन्देहवादी का एकमात्र दर्शन है — मौन। सन्देहवाद उस औषध के समान है जो रोग के साथ-साथ रोगी को भी और स्वयं अपने आप को भी समाप्त कर देती है। पूर्ण सन्देहवादी पर तर्क प्रहार करना मृतक को मारना है। ह्यूम भी अपने सन्देहवाद को अक्षुण्ण नहीं रख सके हैं। वे विज्ञानों के अभिन्नतम सम्बन्ध को मानते हैं। तर्कशास्त्र और गणितशास्त्र के क्षेत्रों में उनको निश्चित और अनिवार्य सिद्धान्त मानने के लिए बाध्य होना पड़ा है।

इसप्रकार ह्यूम को हम पूर्णरूप से सन्देहवादी नहीं कह सकते हैं। उन्हें प्रत्यक्षवादी ही समझना उचित होगा। क्योंकि ह्यूम के भावात्मक और अभावात्मक दोनों पक्षों से दार्शनिक विचार में अच्छा विकास आया है और यही कारण है कि आधुनिक दर्शन में ब्रिटिश विचारकों में ह्यूम को विशेष स्थान दिया जाता है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS